अष्टम् अध्याय

भाषा–शैलीगत शिल्प

भाषा

- यथार्थ चित्रण
- दार्शनिक भाषा
- काव्यमयी भाषा
- संस्कृतनिष्ठ भाषा
- वैज्ञानिक शब्दावली

शैली

- विश्लेषणात्मक शैली
- आत्मकथात्मक शैली
- वर्णनात्मक शैली
- चित्रात्मक शैली

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अष्टम् अध्याय

भाषा–शैलीगत शिल्प

भाषा–शैली उपन्यास का प्रमुख तत्व है। भाषा वह माध्यम है, जिसके माध्यम से उपन्यासकार अपने भावों व विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करता है, और शैली का अर्थ है– इन भावों व विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उत्पन्न वैशिष्टता। भाषा ही एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति की आन्तरिक धारणाओं का विश्लेषण और संश्लेषण प्रस्तुत करता है। भाषा को सशक्त व तर्कसंगत बनाने के लिए एक उपन्यासकार अपनी भाषा में विविध गुणों का समावेश करता है, इसी प्रकार वह विविध शैलियों के प्रयोग द्वारा इसमें स्वाभाविकता व सजीवता लाने का प्रयास करता है। पात्रानुकूल व विषयानुकूल भाषा–शैली ही रचना को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

भाषा : इलाचन्द्र जोशी ने पात्रों के सूक्ष्म तथा गहन व्यक्तित्व के उद्‌घाटन तथा पात्रों की अनुभूतियों, मनोभावों, विचारों आदि में सजीवता लाने के लिए अपनी भाषा में विविध गुणों का समावेश किया है। पात्रानुकूल एवं सारगर्भित भाषा इनके उपन्यासों का प्रमुख गुण है। पात्रों की आन्तरिक कोमलता, भावप्रवणता, स्वप्निल आकांक्षा, संवेदनशीलता आदि विभिन्न भावनाओं को प्रकट करने में इनकी भाषा में काव्यात्मकता का पुट आ गया है, वहीं मनोविश्लेषण करने से भाषा मनोविश्लेषण प्रधान हो गयी है। इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में भाषा के विभिन्न गुणों का अध्ययन करने के लिए उन पर विचार करना आवश्यक है–

यथार्थ चित्रण : इलाचन्द्र जोशी ने व्यक्ति–समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। यथार्थ चित्रण में मानव के वास्तविक जीवन के उच्च एवं निम्न दोनों ही पक्षों का यथातथ्य चित्रण होता है। मनुष्य के वास्तविक जीवन में बाह्य क्रिया–कलापों के साथ उसके अन्तर्मन में छिपी भावनाओं, विचारों, विभिन्न

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आदर्शो, स्वप्नों एवं उसके काल्पनिक जीवन का भी विशेष महत्व है। अतः यथार्थवादी साहित्यकार मानव जीवन की बाह्य एवं आन्तरिक दोनों ही पक्षों को साथ–साथ लेकर चलता है। इन दोनों पक्षों का स्वाभाविक एवं सहज चित्रण ही यथार्थ चित्रण कहलाता है। इसमें जन–साधारण की समस्याओं, मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक अवस्थाओं का यथार्थ चित्रण आवश्यक होता है। इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में दोनों ही पक्षों को ध्यान में रखकर मानव जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

'लज्जा' उपन्यास में लज्जा का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। उसका भ्रातजनित वात्सल्य, काम जनित प्रेमभावना, प्रेम में बाधक राजू के प्रति प्रतिहिंसा की भावना, स्त्रीजनित दिखावे का गुण आदि विभिन्न प्रवृत्तियों का यथार्थ चित्रण किया गया है। 'पर्दे की रानी' में इन्द्रमोहन के अन्दर काम की अदम्य वासना विद्यमान है, जो निरंजना को पाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रपंच करता है। उसके शरीर का उपयोग करने के लिए वह अपनी पत्नी शीला तक को जहर देकर मार देता है। युगीन जीवन का यथार्थ चित्रण 'जहाज का पंछी' में हुआ है। तत्कालीन समाज की राजनैतिक एवं सामाजिक विषमता की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में पात्रों के कथोपकथन के माध्यम से हुई है। उपन्यास का नायक युगीन परिस्थितियों से जूझते हुए कलकत्ता के समाज में आश्रय तलाशता है। शिक्षित होने के बाद भी उसे जीविका के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करने पढ़ते हैं। शोषण के अनेक रूपों का वर्णन 'जहाज का पंछी' में अत्यन्त मार्मिक रूप से हुआ है। 'भूत का भविष्य' उपन्यास में भी निम्न वर्ग पर होने वाले विभिन्न अत्याचारों का यथार्थ चित्रण हुआ है। भूतनाथ कहता है– "आज भी हम देखते हैं कि हरिजनों की विवशता किस अन्धेर की सीमा तक पहुँच गयी है। गाँव–गाँव से समाचार मिल रहे हैं कि हरिजनों की पूरी बस्ती की बस्ती किस निर्ममता से सवर्णों द्वारा जलायी और ध्वस्त की जा रही है।"[1]

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 136

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

दार्शनिक भाषा : इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के जीवन की विविध समस्याओं एवं आन्तरिक प्रवृत्तियों के चित्रण में दार्शनिक भाषा का प्रयोग किया है। दार्शनिकता का पुट उन स्थानों पर आ गया है, जिन स्थानों पर वे विभिन्न समस्याओं पर गहन चिन्तन–मनन करते हैं। 'पर्दे की रानी' की निरंजना सुख–दुःख के सम्बन्ध को दार्शनिक रूप से प्रकट करते हुए कहती है– "सुख केवल मोहमयी कल्पना है। दुःख जीवन के प्रतिपल का प्रत्यक्ष सत्य। सुख तरूण हृदयों के मदिर उच्छ्वासों का केवल फेन है। दुःख उस फेन के नीचे की वास्तविक कटुता। प्रारम्भ में केवल फेन ही फेन दिखाई देता है। पर शीघ्र ही वह फेन विलीन हो जाता है और नीचे का कड़वा पदार्थ अपना असली रंग दिखाकर स्थिरता प्राप्त कर लेता है।"[1] इसी प्रकार 'भूत का भविष्य' में भूतनाथ राकेश से कहता है– "तुम हो छायादास! तुम छाया भी नहीं हो। इसलिए अपने को कल्पित और अयथार्थ छाया का दास समझते रहो, तुम्हारी नन्दा है एक छायामयी नारी। तुम तन–मन से उसी के दास बने रहो। "मैं–मेरा सब असार है। 'तु–तेरा की धारणा ही जीवन दर्शन का सार है।"[2] भूतनाथ राकेश को दुःखों का मूल कारण समझाते हुए कहता है– "अपनेपन की अनुभूति ही मनुष्य के सभी दुःखों का मूल कारण है। इसी कारण मेरे गुरू ने मुझे सबसे पहला उपदेश यही दिया था कि यदि तुम इस संसार में पूर्ण रूप से सुखी रहकर जीना चाहते हो तो उसका एकमात्र उपाय सही है कि अपनेपन की अनुभूति को चारों ओर से लपेटकर बिस्तर की तरह बाँध लो और पाप की उस गठरी को एक तेजधार वाली नदी में फेंककर बहा दो। वह फिर भी बहेगी नहीं, तनिक मौका पाते ही नीचे डूब जायेगी और वहीं से नदी के सारे पानी को गन्दा करती रहेगी। फिर भी नदी का बहाव किसी न किसी उपाय से उस गठरी की सारी गन्दगी से अपने को मुक्त कर ही लेगा।"[3]

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 18

2 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 70

3 वही, पृष्ठ– 69

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

काव्यमयी भाषा : इलाचन्द्र जोशी ने पात्रों के भावुकतापूर्ण परिस्थितियों के अंकन के लिए काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। ऐसा उन स्थलों पर हुआ है जहाँ पात्रों के भावुक प्रसंगों व प्राकृतिक छटा का वर्णन किया गया है। 'लज्जा' उपन्यास में नायिका लज्जा भाई की हत्या के बाद की भावुक स्थिति में कहती है– "हाय हतभागिनी नारी! पुरूष के बिना तुम्हारा जीवन ही नहीं है। पुरूष को लेकर ही इस अनंतव्यापी! ईथर–प्रकंपित सृष्टि में तुम्हारी सत्ता है, अन्यथा तुम शून्य की तरह निस्तरंग, जड़ और निर्विकार हो। पुरूष को अपनी कमनीय सुकुमारता से रिझाने में ही तुम्हारी सार्थकता है।"[1] इसी प्रकार राजू अपनी डायरी में लिखता है– "क्या मनुष्य का जीवन सचमुच एक आनन्दमयय स्वप्न है? अथवा किसी पैशाचिक देवता का निष्ठुर अभिशाप।"[2] 'संन्यासी' में भावुक नन्दकिशोर सोचता है– "छुटपन से ही तुम्हारे रूप पर, तुम्हारे यौवन पर, तुम्हारे कल–कल गुज्जन पर मुग्ध रहा हूँ। मेरे बाल्य और किशोर जीवन की कितनी मधुर स्मृतियाँ तुम्हारे साथ सम्बन्धित रही है! यौवन की प्रबल आँधी के चक्कर में पड़कर तुम्हें बिल्कुल भूल गया था। आज माना संघर्ष–विघर्षों के जटिल जला से छिन्न–भिन्न होकर तुम्हारे तट पर आश्रय के लिए आया हूँ। क्या तुम आज अपने हृदय के अतल में मुझे परिपूर्ण रूप से आश्रय न दोगी? यह सोचते ही मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ और सचमुच मेरे भीतर यह तरंग उठी कि गोमती के स्निग्ध शीतल जल में कूदकर सदा के लिए विश्राम, लूँ, और अपने जीवन के कलंकों की प्रगाढ़ कालिमा को धोकर मिटा डालूँ।"[3]

'पर्दे की रानी' में निरंजना द्वारा काव्यात्मक भाषा का सृजन किया गया है। वह सोचती है– "झरने के मूलश्रोत में फूटी हुई सौ–सौ धाराएँ एक पागल प्रेमिक की निराशा की सहानुभूति में चारों ओर से फुहर–फुहर कर गरज–गरज

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 19–20

2 वही, पृष्ठ – 146

3 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 193

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कर पत्थरों पर पछाड़ खाती हुई हाहाकार मचा रही हैं।"[1] 'निर्वासित' में महीप कहता है– "तुम इस रक्त रंजित युग की प्रज्ज्वलित अग्नि में, अपने प्राणों की आहुति डालकर स्वयं प्रलय की होमशिखा–सी जलने वाली स्वाहा हो। एक दिन अणु–बमों की ज्वालाओं के साथ तुम्हारी ज्वाला भी मिलकर एकाकार हो जायेगी और विश्व की चिता पर तुम दोनों की लास–लीला एक अद्‌भुत ताण्डव–नर्तन दृश्य दिखायेगी।"[2] 'मुक्तिपथ' में सुनन्दा काव्यमयी भाषा द्वारा अपनी व्यथा प्रमीला के सामने प्रकट करती है– "कई पीढ़ियों से बंजर पड़ी हुई जमीन तुम्हारे राजीव बाबू के दुर्दम कर्मोद्यम से आज लहलहा रही है, पर मेरे भीतर की जमीन एकदम सूखी और सूनी पड़ी है। बालू केवल बालू! पानी की बूँद भी कहीं नहीं है हरियाली की कौन कहे!"[3] 'ऋतुचक्र' उपन्यास में काव्यमयी भाषा द्वारा नकुलेश कहता है– "मुझ भटकते हुए को एक लक्ष्य एक ध्रुवतारा मिल गया। लगा कि जीवन में केवल भटकना ही भटकना नहीं है, कुछ विश्राम स्थल भी हैं, जहाँ सुस्ता कर मुक्ति की साँस ली जा सकती है।"[4] 'जहाज का पंछी' में भावुक नायक लीला के सामने अपनी विगत जीवन की स्मृतियों को प्रकट करता है– "बचपन से ही संगीत और सौन्दर्य के अपार रहस्यमय और विविध वैचित्र्यपूर्ण मायालोक की रूप–रस–रंग–भरी, स्वप्नाछन्न कुंज गलियों में आन्तरिक उल्लास से इस तरह भटकता रहा हूँ कि उनसे अलग होने की कोई भावना ही मेरे मन में कभी जग नहीं पाती थी! लगता था जैसे सारा जीवन उसी तरह निर्मुक्त आनन्द, विशुद्ध और उदात्त पुलकानुभूतियों के बीच में सहज ही बीतता चला जायेगा।"[5] 'भूत का भविष्य' में भूतनाथ राकेश से भावावेश में कहता है– "चिन्ता की जलन से तनिक भी विश्राम चाहते हो, कैलास, तो अपनी अहंता के इस कड़े, गन्दे, दागी और विकट बद्‌बूदार परिधान को चीरकर उबारो और फेंक डालो,

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ – 182

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 340

3 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 277

4 'ऋतुचक्र' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 129

5 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 326–327

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

तभी समझ पाओगे कि सुख और सन्तोष नाम की चीजें केवल शब्द मात्र नहीं हैं। इनका भी अस्तित्व वैसा ही यथार्थ है जैसा हमारे ऊपर के इस तारालोकित आकाश का, पाँवों के नीचे की धरती का!"[1]

संस्कृतनिष्ठ भाषा : इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग भी किया है। जब पात्र किसी कल्पना जगत में विचरण करता है, तो उसके कल्पना जगत का चित्रण करने के लिए जोशी जी ने तत्सम शब्दावली युक्त भाषा का प्रयोग किया है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा अपने भाई के प्यार की कल्पना में अपना जीवन व्यतीत करती है– "मैं अपने नव–मल्लिका–मय, मलय–कोमल, मोहाछन्नकारी, मधुमय, स्वप्नों को लेकर दिन बिताने लगी।"[2] डॉ. कन्हैयालाल से प्रथम भेंट के बाद की स्थिति को वह स्वयं उद्घाटित करती है– "कुसुम–कोमल, रेशम–सज्जित, एसेंस–सुवासित, विहग–पक्षों से निर्मित शय्या की सुकुमार कोमलता में मैं मक्खन की तरह मिलकर पिघली जाती थी।"[3] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर के बचपन की मधुर स्मृतियों का अंकन संस्कृतनिष्ठ भाषा में हुआ है– "मेरे बाल्यकाल का स्निग्ध, सरस सौन्दर्यमय जीवन पुलक–स्पन्दन से मृदु–मृदु लहराने लगा।"[4] 'जहाज का पंछी' में नायक विचित्र कल्पना लोक में सोचता है– "शरत्काल में वर्षा से धुली और निखरी हुई प्रकृति की अकलुष और निष्पात रूप–छटा, अश्रुतरल उज्ज्वल प्रभाव–सुनहरी सन्ध्याएँ चाँदनी से नहाई हुई रातें और निर्मल चेतस की तरह प्रसन्न आकाश में कोटि–कोटि विश्वों का अगणित मेला देख–देखकर मेरी अहंगत चेतना सहस्रों बन्धनों को तोड़–तोड़कर जब अनेक रूपों में पल्लवित और पुष्पित होकर निराले वर्ण वैचित्र्य के साथ आत्म–प्रकाश करती थी।"[5] 'भूत का

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 70

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 19

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 33

4 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 23

5 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 327

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भविष्य' में भूतनाथ विगत जीवन की स्मृतियों को तत्सम शब्दावली युक्त भाषा के माध्यम से राकेश और सुनन्दा के सामने रखता है– "मनुष्यों के बाह्य संस्कारों में चाहे जमीन–आसमान का अन्तर क्यों न हो, पर स्नेह, दया और ममता की दुनिया में सब समान हैं। सभी एक अवर्णनीय और अनिर्वचनीय मातृशक्ति के स्नेहामृत से पूर्ण–अपूर्ण करूणा–धारा से निरन्तर अभिषिक्त होते रहते हैं।"[1]

वैज्ञानिक शब्दावली : मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों ने विभिन्न वैज्ञानिक शब्दों और उपमाओं के द्वारा मनोविश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में भी विभिन्न स्थानों पर वैज्ञानिक शब्दावली एवं उपमाओं का प्रयोग हुआ है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा दो पुरूष–प्रशंसकों की ओर आकर्षण को इस प्रकार व्यक्त करती है– "हमारे बीच से होकर चुबंक–शक्ति की जो अदृश्य धाराएँ तरंगित हो रही हैं, वे चिरस्थायी और अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।"[2] डॉक्टर कन्हैयालाल की तीक्ष्ण दृष्टि के सम्बन्ध में वह बताती है– "उनकी आँखों के विद्युत्–घर्षण से मेरी आँखें चौधियाँ गईं।"[3] 'पर्दे की रानी' में निरंजना कहती है– "मेरे अहंभाव का जो विराट् पाषाण भार मेरे व्यक्तित्व को दबाये हुए था, चोट वास्तव में उसी पर पड़ी थी। उस चोट की गूँज को वास्तविक आघात समझे बैठे थी। यह अच्छा ही है। मेरे इस नकली व्यक्तित्व– मेरे अहंभाव की चट्टान–पर आघात–पर – आघात पड़ते चले आवें। पर वह 'डाइनेमाइट' मैं कहाँ पाऊँ जिससे बज्र भार से निर्मित पाषाण को तोड़ कर चकनाचूर किया जा सके?"[4] 'प्रेत और छाया' में अपने पिता से अपने जन्म का इतिहास सुनकर पारसनाथ के मन में उठने वाले क्रोध और हिंसा के भावों को वैज्ञानिक शब्दावली के माध्यम से चित्रित किया गया है– "रह–रहकर कालकूट से भी अधिक तीव्र और उग्र विषयुक्त हाइड्रोजन से उसकी छाती बैलून

---

1 'भूत का भविष्य' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 89

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 41

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 43

4 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 132–133

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

की तरह फूल उठती थी–चरम विस्फोट के लिए।"[1]

'निर्वासित' में वैज्ञानिक शब्दावली एवं उपमाओं की भरमार है। महीप की मनःस्थिति का वर्णन वैज्ञानिक शब्दावली में किया है– "वह अनुभव कर रहा था कि उसका जो रक्त इतने दिनों तक बर्फ की तरह ठण्डा बनकर अत्यन्त जड़ और उदासीन रूप धारण किए हुए था, वह बिजली के तेज हीटर की सी गरमी से केवल पिघला ही नहीं, बल्कि काफी गरमा गया है और धीरे–धीरे उस स्थिति को पहुँचता जा रहा है जब वह सम्भवतः पूर्णतया खौल भी सकता है।"[2] 'मुक्तिपथ' में प्रोप्राइटर साहब के प्रति राजीव के मन में उठने वाले घृणा और प्रतिहिंसा की भावना को वैज्ञानिक शब्दावली में चित्रित किया गया है– "राजीव के भीतर बहुत देर से घृणा और प्रतिहिंसा की भावनाएँ मुख बंद किये हुए स्टीम बायलर के धुएँ की तरह पूँजीभूत होती जा रही थी।"[3] 'सुबह के भूले' में अपने साथियों द्वारा गिरिजा की उपेक्षा के स्पष्ट कारण को जानने के बाद गिरिजा की स्थिति का वर्णन वैज्ञानिक शब्दावली में किया गया है– "उसके मुख का सारा वयंग्यात्मक भाव, सारी मस्ती, सारा अल्हड़पन, जवानी का संपूर्ण आत्मविश्वास, पल में इस तरह गायब हो गये जैसे रंग विरंगे बल्बों का बंदनवार मेन स्विज के 'आफ' होते ही एक क्षण में सारे का सारा बुझ जाय।"[4]

शैली : शैली लेखक के भावों व विचारों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण और सशक्त माध्यम है; जिससे एक उपन्यासकार की विशिष्टता का पता चलता है। इलाचन्द्र जोशी ने अपने उपन्यासों मे विविध शैलियों का प्रयोग किया है। आवश्यकतानुसार उपयुक्त शैली का प्रयोग करके उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय दिया है। उनकें उपन्यासों में निम्नलिखित शैलियों के दर्शन होते हैं–

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 49

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 157

3 'मुक्तिपथ' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 13

4 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 120

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

विश्लेषणात्मक शैली : इलाचन्द्र जोशी ने पात्र की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों के सूक्ष्म अंकन के लिए विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनके सभी उपन्यासों में इस शैली के दर्शन होते हैं। व्यक्ति के अवचेतन में अवस्थित अहंवाद, कामकुण्ठा, प्रतिहिंसा स्वार्थपरता, घृणा आदि की भावना को प्रकट करने एवं उनका विश्लेषण करने के लिए मनोविश्लेषण युक्त भाषा का प्रयोग किया गया है। 'लज्जा' उपन्यास में राजू के प्रति लज्जा की प्रतिहिंसा की भावना का विश्लेषण किया गया है– "राजू के हृदय की जलन की कल्पना से मेरे हृदय की हालत अजीब होती जाती थी। भाई के प्रति ऐसी उत्कट प्रतिहिंसा का भाव किसी बहन के हृदय में कभी उत्पन्न हुआ या नहीं मैं नहीं जानती।"[1] 'संन्यासी' में नन्दकिशोर का विश्लेषण विश्लेषणात्मक शैली में हुआ है। वह जयंती के सामने स्वीकार करता है– "मैंने बात–बात में उसे परेशान किया, बात–बात में उस पर सन्देह किया। उसके प्राणों की ममता को मैं ठीक तरह से समझ नहीं पाया। अन्त में जब समझा तो काफी देर हो चुकी थी, और तार टूट चुका था।"[2] 'पर्दे की रानी' में गुरूजी निरंजना के स्वभाव का विश्लेषण करते हैं– "जो व्यक्ति तुम्हारा रक्षक बनकर ही भक्षक बनाने पर उतारू था, तुम्हें एक वेश्या की बेटी समझकर अत्यन्त हीन दृष्टि से देखता था (अपनी लड़कियों तक को उसने कभी तुम्हारे पास नहीं आने दिया) और साथ ही तुम्हारे कौशल से तुम्हारा कौमार्य नष्ट करने की प्रबल इच्छा रखता था, उसके लड़के के भीतर लालसा की आग भड़का कर उसे जीवन भर अतृप्ति की आँच में तड़पाते रहने की प्रवृत्ति जान में या अनजान में तुम्हारे भीतर घर कर गयी थी।"[3] 'प्रेत और छाया' में पारसनाथ की विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण मनोविश्लेषणात्मक शैली में हुआ है। अपने पिता की बात सुनकर पारसनाथ के अन्दर क्रोध और हिंसा की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है– "पारसनाथ के भीतर जैसे जन्म–जन्मान्तर से संचित क्रोध और

---

1 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी, पृष्ठ– 94

2 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 181

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 217

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हिंसा की उन्मत्त तरंगें पागल गति से उमड़ती हुई, शेषनाग के सहस्र फनों की तरह फुँफकार मचाती हुई उसकी नाक के दो छिद्रों से होकर विषैली साँसे छोड़ने लगी।"[1]

'जहाज का पंछी' में नायक अपना विश्लेषण स्वयं प्रस्तुत करता है– "प्रत्येक बार मैं सोचता कि अगले व्यक्ति के आगे अपनी व्यथा की करूण–कथा अवश्य प्रकट करूँगा, पर हर बार जबान पर जैसे ताला जग जाता। मेरे मुँह से बात जो निकल नहीं पाती थी उसका एक कारण तो स्पष्ट ही मेरे भीतर युग–युगों से अवरूद्ध सांस्कृतिक संस्कार था। पर उसके अलावा एक और कारण भी था।"[2]

आत्मकथात्मक शैली : आत्मकथात्मक शैली में उपन्यास की नायक–नायिका अथवा कोई पात्र अपनी कहानी को पाठकों के सम्मुख रखता है, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में इस प्रकार की शैली का प्रयोग अधिक हुआ है, क्योंकि उपन्यासकार पात्र अथवा कथा कहने वाले की समस्त मानसिक प्रक्रियाओं से अवगत कराते चलता है। इलाचन्द्र जोशी ने 'लज्जा', 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'त्याग का भोग' और जहाज का पंछी आत्मकथात्मक शैली के उपन्यास हैं। 'लज्जा' उपन्यास की नायिका लज्जा स्वयं अपनी कहानी पाठकों को सुनाती है– "आज अन्तिम बार अपनी निर्लज्ज कहानी समस्त संसार को मुझे सुनानी ही होगी।"[3] 'संन्यासी' में नायक नन्दकिशोर आत्मकथात्मक शैली में अपनी सम्पूर्ण कथा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। अपने संन्यासी वेश के बारे में वह कहता है– "मैंने संन्यासी का वेश धारण किया है, संदेह नहीं। पर संन्यासी मैं न कभी था और न हूँ। तब दुनिया को और अपने आपको क्यों मैंने ठगा है?"[4]

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 181

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 10

3 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 7–8

4 'संन्यासी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 5

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'पर्दे की रानी' में निरंजना आत्मकथात्मक शैली में अपनी कथा कहती है– "मैं अपने कमरे में सोई हुई थी। उस दिन एक ऐसी फिल्म देखकर मैं घर वापस आई थी जिसने तरूणाई के प्रथम आभास से पुलकित मेरे हृदय में एक नयी उमंग तरंगित कर दी थी।"[1] 'जहाज का पंछी' में नायक अपनी व्यथा प्रकट करता है– "मेरी शारीरिक और मानसिक स्थिति दिन–पर–दिन बिगड़ती चली गई। कालेज स्क्वायर के एक बेंच पर बैठा–बैठा मैं पास ही चना, चिउड़ा, मूँगफली और इसी तरह की दूसरी चीजों से सजे हुए खोमचों की ओर ललकती आँखों से देखता रहता। मुँह में पानी भर आता, पर आँखों का पानी सूख गया था, जैसे जीवन के अन्तहीन रेगिस्तान के भीतर दो अनादि और अतल धाराएँ सदा के लिए खो गईं हों।"[2]

वर्णनात्मक शैली : वर्णनात्मक शैली में पात्र की विभिन्न भावनाओं एवं घटनाओं का वर्णन स्वयं पात्र नहीं करता है बल्कि अन्य पात्र जो कि उपन्यासकार स्वयं होता है, इन पर प्रकाश डालता है। बीच–बीच में वह अपने विचार भी प्रकट करता है। इस शैली में उपन्यासकार अपने आप को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करता है। इलाचन्द्र जोशी ने किसी पात्र या घटना का वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'सुबह के भूले' उपन्यास में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं। इसमें स्थान–स्थान पर विभिन्न सामाजिक प्रवृत्तियों का वर्णन किया है। प्रारम्भ में ही बम्बई में रहने वाले झोपड़ी में निवास करने वाले लोगों की विभिन्न सामाजिक परम्पराओं का वर्णन है। बम्बई के फैशनेबल समाज का वर्णन भी हुआ है। भिखारियों की स्थिति का सजीव वर्णन किया गया है– "उन पाँच भिखारियों के जाते ही क्षण–भर में पाँच–सात और भिखारियों और भिखारी बच्चों ने उसे घेर लिया। 'ऐ माई, हमको भी ! ओ रानी मुझको भी! कहते हुए सब उसके चारों ओर चरखे के से एकतारा स्वर में एक विचित्र सम्मिलित राग अलापने लगे। मनी–बैग से कुछ और रेजगारी निकाल

---

1 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 31

2 'जहाज का पंछी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 10

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कर गिरिजा ने बाँटना शुरू कर दिया। भिखारियों के लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था कि कोई व्यक्ति मंगतो की भीड़ से घिर जाने पर भी उन्हें डाँटने–डपटने के बजाय अत्यन्त शांत भाव से, आन्तरिक सहृदयता का भाव आँखों में झलकाते हुए उन्हें कुछ–न–कुछ देता चला जाय।"[1]

चित्रात्मक शैली : चित्रात्मक शैली के प्रयोग द्वारा पात्र की विभिन्न मनःस्थितियों एवं स्वभाव की विचित्रता का सजीव चित्र खींचने का प्रयास किया गया है। अनेक प्रकार की उपमाओं द्वारा भी चित्र खीचा गया है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा की मानसिक स्थिति का सजीव चित्रण किया गया है– "किसी अज्ञात कारण से मेरे स्मृति–पटल में मेरे जीवन के एक ऐसे दिन का चित्र अंकित हुआ, जब खूब जोर से पानी बरसने के बाद पूर्वाकाश इन्द्र–धनुष की मनोहर छटा से विभासित हो गया था। पत्रों के झुरमुटों से होकर जलकण सूर्य के प्रकाश में मोतियों की तरह नीचे टपकते जाते थे और मैं अपने भावी जीवन के उल्लास से बाहर बगीचे में बिना किसी कारण के इधर–उधर दौड़ रही थी।"[2] 'पर्दे की रानी' में इन्द्रमोहन से मुलाकात के बाद अपने पर उसके प्रभाव का वर्णन निरंजना इस प्रकार करती है– "कोई यात्री कृष्णपक्ष की किसी रात्रि में किसी जहाज पर सवार होकर कुछ ऊँघते और कुछ सोते हुए अनुकूल समुद्र की यात्रा के लिए निरूद्देश्य चल पड़े। रात–भर उसे इस बात का पता न लगने पावे कि उसका मल्लाह उसे किस दिशा और किस देश की ओर लिए चला जा रहा है। सुबह को उसे कुछ अद्भुत प्रकृति की ओर विचित्र रीति–रस्मों को मानने वाले विजातीय मनुष्यों के बीच एक छोटे से टापू में अकेला छोड़कर वह जहाज मल्लाह सहित गायब हो जाय, तो उस पथिक की जो मानसिक स्थिति होगी, मनमोहन बाबू के यहाँ आने के बाद से वही दशा मेरी भी हो रही थी।"[3]

---

1 'सुबह के भूले' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 129

2 'लज्जा' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 123

3 'पर्दे की रानी' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 75

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'प्रेत और छाया' में पिता की बात सुनकर पारसनाथ के मन मे विद्रोह की भावना उत्पन्न होने लगती है और उसकी कुण्ठा का कारण भी यही है। "नहीं, मैं इस वीभत्स गिद्ध का बेटा कभी नहीं हो सकता– किसी भी हालत में नहीं;, न रूप में, न रंग में न किसी मनोभाव में ही उससे मेरा कोई साम्य है! पर यदि मैं उसका बेटा नहीं हूँ तो इसका अर्थ स्पष्ट ही यह है कि मेरी माँ वास्तव में व्यभिचारिणी है और मैं उसकी जारज सन्तान हूँ: इस अन्तिम कल्पना ने उसके अधपके फोड़े को अत्यन्त निर्ममता के साथ नाखून से खरोंच दिया। वह भीतर–ही–भीतर कराह उठा, और करवट बदलकर, लेटे–ही–लेटे उसने दोनों हाथों से अपना सिर ढक लिया।"[1] 'निर्वासित' में शारदा के व्यक्तित्व का वर्णन चित्रात्मक शैली में इस प्रकार हुआ है– "आज तक शारदा देवी का व्यक्तित्व कुछ दूसरे ही रूप में उसकी आँखों के आगे आया करता था। मकड़ा जिस प्रकार अपने जाले में मक्खी को फँसा कर, उसे न तो मारकर खाता है न समूचा निगलता है, बल्कि उसके शरीर के भीतर के अदृश्य और परमाणुवत् सूक्ष्म छिद्रों से उसका समस्त सत्य चूसकर उसके शारीरिक ढाँचे को ज्यों–का–ज्यों छोड़ देता है, शारदा देवी की कल्पना ठीक उसी निःसत्व जीव के रूप में उसके मन में उठा करती थी।"[2] 'त्याग का भोग' में मनिया की बातों का रंजन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रात्मक वर्णन इस प्रकार हुआ है– "मैं अजानित आशंकाओं से त्रस्त होकर सहमी हुई आँखों से उसकी ओर देख रहा था। लगता था जैसे युगों से सुदृढ़ नींव पर जमायी हुई इस्पात की–सी दीवारें किसी ऐसी प्रचण्ड भौतिक शक्ति से थरहरा कर, चकनाचूर होकर नीचे गिर पड़ी हैं, जिसकी आज तक कोई कल्पना ही मनुष्य के मस्तिष्क में नहीं थी।"[3]

इस प्रकार उपयुक्त भाषा के चयन व विविध शैलियों के प्रयोग से इलाचन्द्र जोशी की भाषा सहज व प्रवाहमयी बन पड़ी है, जो पाठकों को

---

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 51

2 'निर्वासित' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 160–161

3 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी : पृष्ठ – 369

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सजीवता व स्वाभाविकता का आभास दिलाने में सक्षम है। यद्यपि उन्होंने अपनी रचनाओं में विवध शैलियों का प्रयोग किया है, लेकिन मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग अधिक किया है; इसलिए इनके उपन्यासों को मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास कहा जाता है।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/